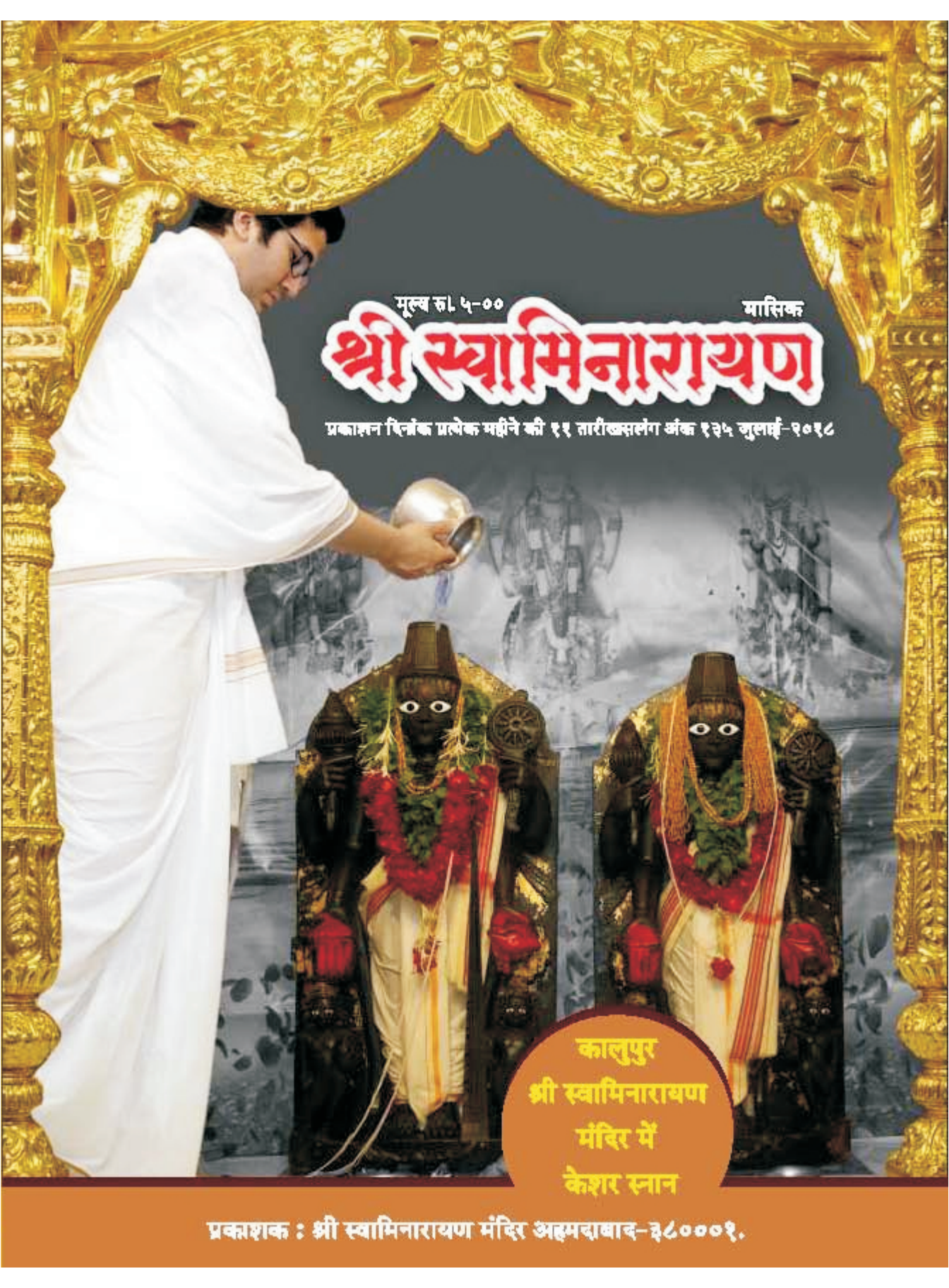

मूल्य रु. ५-००

मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीखसलंग अंक १२५ जुलाई-२०१८

कालुपुर
श्री स्वामिनारायण
मंदिर में
केशर स्नान

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

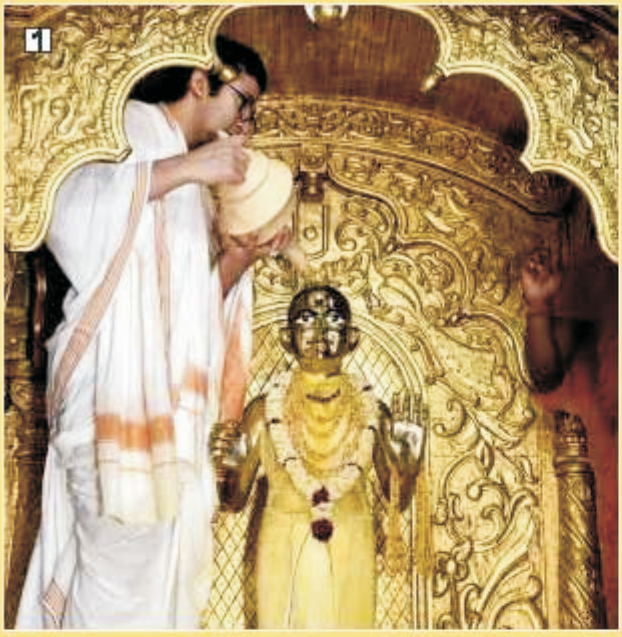

(१) नारणघाट मंदिर में अधिक मास के उपलक्ष्य में ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री। (२) जीवराजपार्क मंदिर में पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (३) महालेकनगर मंदिर में पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन तथा सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (४) मेमका (मूली देश) गुरुमंत्र महामहोत्सव के अवसर पर हरिभक्तों को दर्शन देते प.पू. आचार्य महाराजश्री। (५) मोडासा (नालंदा) मंदिर में पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - १२ ● अंक : १३५
जुलाई-२०१८

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	सेवकराम	०६
०४.	सुरवनिधिको प्रणाम	०८
०५.	गूरूपूर्णिमा के पवित्र पर्व के उपलक्ष्य में संक्षिप्त लेखन	११
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१३
०७.	सत्संग बालवाटिका	१६
०८.	भक्ति सुधा	१९
०९.	सत्संग समाचार	२१

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४११५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in
मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

वर्षाऋतु के आ जाने से सम्पूर्ण सृष्टि आनंदमय हो जाती है। पर्यावरण को प्रदूषित करने में मनुष्य ने कुछ छोडा नही है ? यदि हम इस पर्यावरण को बचायेगे नही तो आने वाले वर्षो में ५०° फारेनहाईट गर्मी को झेलना पडेगा। ये बात तो निश्चित है। हमारा सभी हरिभक्तो से नम्र निवेदन है कि आप जहाँ रहते है वहाँ पर प्रथम स्वच्छता रखने का नियम रखें। अपने घर से शुरुआत करने से दूसरे को सिखा सकते है और योग्य जगह मिले तो प्रति परिवार एक वृक्ष को अवश्य लगाये। वर्षा ऋतु में लगाकर उसके देख-भाल की जिम्मेदारी पूर्ण करियेगा। यह कोई बहुत बड़ी जिम्मेदारी नहीं है फिर भी अपनी जिम्मेदारी में आता ही होगा। इस चातुर्मास में आठ नियमो में से यह भी एक नियम रखियेगा। हम जहाँ रहे वहाँ स्वच्छता रखे और पर्यावरण को क्षति पहुँचे ऐसे क्रिया-कलाप बंद कर दे।

निंदा स्वभाव को हटाने वाला उपाय ''जैसा व्यापारी होता है जितना व्यापार करता है उसका खाता बनाकर रखता है। इसी प्रकार, दिनो के सत्संग पश्चात जिसने लेखा-जोखा रखा है उनका स्वभाव बदलता है और वह ऐसा विचार करता है। जब मैं सत्संग नही करता था तब मेरा स्वभाव मलिन था। और सत्संग करने के बाद स्वभाव उत्तम हुआ है तथा प्रति वर्ष वृद्धि होती है। यदि कोई कमी रह जाती है तो वह तपस्या करता है, लेकिन मूर्ख व्यापारी की तरह लेखा-जोखा लिख कर मूल्यांकन नही करता है। अर्थात् सत्संग करके स्वयं का मूल्यांकन करने से यदि बुरे स्वभाव है तो समाप्त हो जाते है।(व.सा. १८)

इस लिये यदि अपने पास कोई मलिन स्वभाव हो तो उसे दूर कर देना चाहिए।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जून-२०१८)

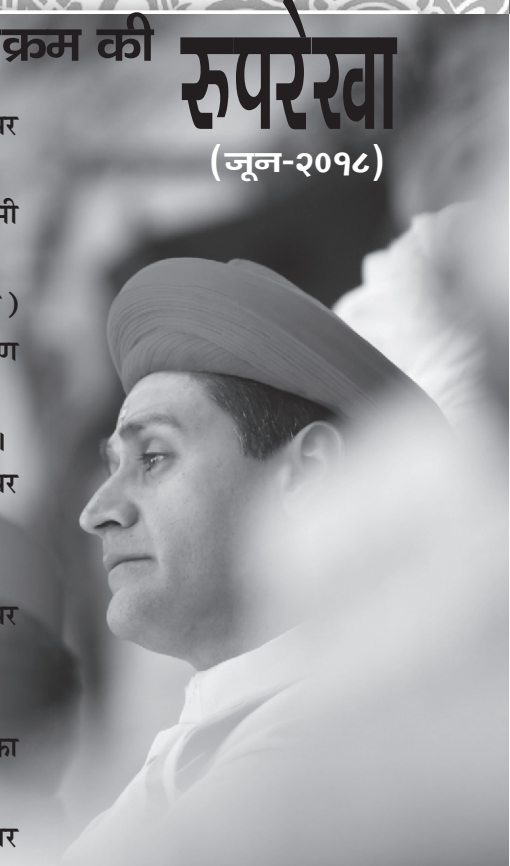

३	श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
५-६	श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) अ.नि. पू. स.गु. स्वामी केशवप्रसाददासजी के स्मृति पारायण अवसर पर आगमन।
१२-१९	श्री स्वामिनारायण मंदिर बायरन ५वाँ पाटोत्सव (अमेरिका) एटलान्टा मंदिर पाटोत्सव और टीमटन (अमेरिका) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अवसर पर आगमन।
२१	श्री स्वामिनारायण मंदिर इडर पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
२२	श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
२३	संत महादीक्षा विधिस्वयं के द्वारा सम्पन्न कराना।
२४	मेमका (मूली देश) गाँव में गुरुमंत्र महामहोत्सव के अवसर पर नये आश्रितो को गुरुमंत्र देना।
२५	बालासिनोर गाँव में वाडी उद्घाटन अवसर पर आगमन।
२७	श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली (वासणा) ठाकुरजी का केसर स्नान अपने करकमलो से किये।
२९	श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल पंचवटी ठाकुरजी का केसर स्नान अपने कर कर कमलो से किये।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जून-२०१८)

७	श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर अधिक मास के अवसर पर ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक स्वयं के हाथो द्वारा पूर्ण किये।
१२-२३	अमेरिका धर्मप्रवास, श्री स्वामिनारायण मंदिर बायरन का ५वाँ पाटोत्सव, एटलान्टा मंदिर में सत्संग सभा और आई.एस.एस.ओ. चेप्टर नये मंदिर टीमटन में सत्संग सभा आदि अवसर पर आगमन।
२७	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव को केसर स्नान स्वयं के हाथो से पूर्ण किये

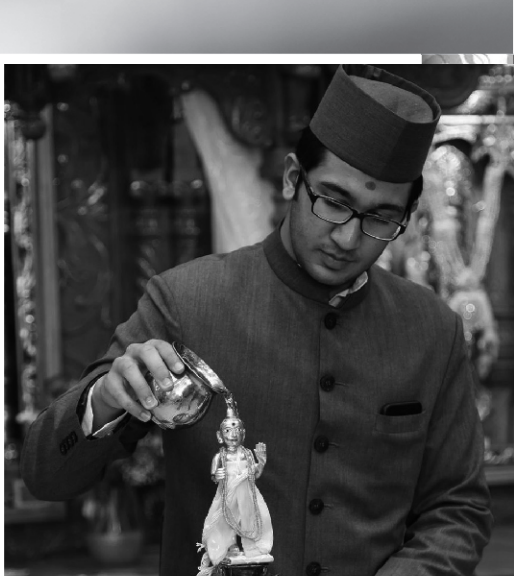

सेवकराम

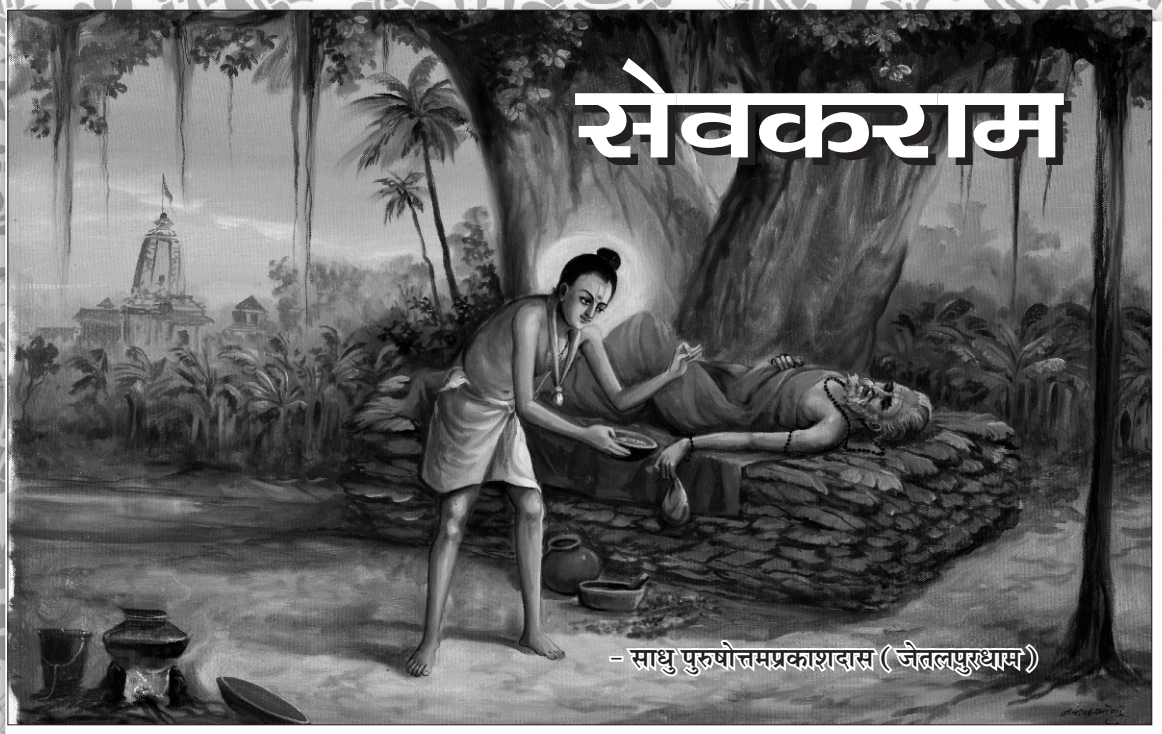

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

श्रीहरि वन में विचरण करे रहे थे तब कई साधु संघो से परिचय हुआ । उस सम्प्रदाय में अधिक प्रसिद्ध सेवकराम नाम के एक साधु थे । वे अच्छे विद्वान श्रीमद् भागत पुराण आदि का अध्ययन किये थे । वे अयोध्या में भगवान रामचन्द्र जन्म स्थान मंदिर मे सेवा करते थे । श्रीहरि बाल्यावस्था में अयोध्यां रहे उस समय मित्रो के साथ नित्य जन्म स्थल मंदिर दर्शन हेतु जाते थे । श्रीहरि साधु सेवकराम की सज्जनता, पवित्रता और विद्वता का आदर करते हुए उनके पास बैठते थे । श्रीहरि उनके पास से भागवत के भ्रमरगीत और गोपी गीत के श्लोक सीखे थे । सेवकराम को श्री बाल घनश्याम की मूर्ति में दिव्य भाव दिखा था । इस कारण से अतयन्त आदरपूर्वक ज्ञान वार्ता करके प्रभु को खुश करने का प्रयास करते थे । उनको जब तक घनश्याम महाराज का दर्शन न हो जाये तब तक उनको चैन नही होता था । ईश्वरत्व के निश्चय से काफी नजदीक आ गये थे । वे जन्म स्थान मंदिर में आने-जाने वाले यात्रीयों तथा साधु संतो से श्री घनश्याम महाराजके गुणो की बात करते थे । जिस दिन दर्शन नही होता था उस दिन उनका हृदय व्याकुल हो जाता था । इसके पश्चात पूर्वाश्रम में सरयू पार अयोध्या के पास मखोडा घाट के पास कुल गाँव के विप्र बिरादर होने के कारण परिवार वाला भाव भी था । श्रीहरि उनसे अपने जीवन का उद्रदेश्य जानकर संकल्पो की पात्रता जानकर बात करते थे । अब तो सेवकराम जन्म स्थान की सेवा करते हुए श्री घनश्याम महाराज में अति स्नेह हो गया था । सच्चा प्रेम तब पता चला जब श्रीहरि वन विचरण हेतु घर का परित्याग किये तब श्रीहरि के वियोग से कई दिन तक अन्न-जल नही ग्रहण किये । घनश्याम प्रभु का समाचार ज्ञात करने के लिए बड़े भाई रामप्रतापभाई, श्रीहरि का सेवकराम के साथ अधिक मन-मिलन था । इस लिए उनसे पूछने के लिये बड़े भाई जन्म स्थान मंदिर में आये थे तथा श्रीहरि के बार में पूछे तभी सेवकराम

साधु विरह में रोने लगे। आँख के आँसु पोछते-पोछते बोले कि घनश्याम प्रभु कई दिनो से वैराग्य की बात करते थे। लगता है वै तीर्थयात्रा पर निकल गये है। यह ज्ञात होने पर बड़े भाई के आँखो से अश्रु निकलने लगे। सेवकराम से भेट हो जाये इस भावनासे रामेश्वर इत्यादि धामो का दर्शन किये। वे जन्म स्थान मंदिर की सेवा छोडकर चल दिये। साथ के साधुओ का साथ भी था। घुमते-घुमते श्रीहरि के सद्‌गुणो को याद करते हुए बोलते थे कि संसार में बडे-बड़े योगी त्यागी, वैरागी कई देखे है लेकिन घनश्याम प्रभु के समान कोई नही है।

श्रीहरि वन में गये। उसके ठीक पाँच वर्ष के बाद दक्षिण भारत में वेकेटादि पर्वत से रामेश्वरम जाते हुए श्रीहरि की ईच्छा से सेवकराम और नीम कंठवर्णी से भेट हुई। दोनो लोग आपस में प्रेम से मिले। सेवकराम बोले ! वर्णीजी ! आप के परिवार वाले आप के विरह से अधिक दुःखी है। कहीं पर मन नही लग रहा है। अन्न-जल का त्याग करके शरीर कमजोर कर लिये है। इस लिये मैं आप को खोजने निकला हूँ। इस लिए हम दोनो अयोध्या वापस चलते है। श्रीहरिकी बात सुनकर हँसे बोले आप का और मेरा अब साथ नही चलेगा। पूर्वाश्रम के जो सम्बन्धी हो उनको छोड़ देने के पश्चात सम्भालना नही चाहिए। त्यागी होने के पश्चात सम्बधी को सम्भालने पर बंधन अवश्य हो जाता है। अब आप के साथ भी नही रहूँगा। मैं अकेले ही भ्रमण करुँगा। इसलिए किसी त्यागी को भी साथ नहीं रखता हूँ। किसी को साथ रखेगे तो घर वालो से बात करेगा। घर के लोग पीछे-पीछे आयेगे तो हमें त्याग का सुख नही प्राप्त होगा। सेवकराम सम्बन्धके कारण वन में साथ चलते-चलते संसार एवम् रिश्तेदारो की बात करते हुए श्रीहरि के वृत्ति में बदलाव लाने हेतु प्रयत्न करने लगे। तब श्रीहरि उदास हो गये। वर्णी का वैराग्य इतना प्रबल था कि जैसे भोजन में कंकड से गतिरोधआ जाता है। सेवकराम घर परिवार की बाते करते थे। उतर में वर्णीजी भरत का दृष्टांत देते थे। एक दिन सोते छोडकर वर्णीजी अकेल चले गये। प्रातः वर्णी को न देखर कर रोने लगे और विरह के भय से पेट खराब हो गया। उनके साथ का साधु भी साथ छोडकर चल दिया। अधिक रोदन करने लगे और निराधार हो गये। श्रीहरि को दया आई साधु जानकर मिले और बोले कि ईश्वर के सिवाय कोई बात मत करना। आप त्यागी है। आप इस तरह का व्यवहार करेगे तो हम उन्हें वापस ला देगे। तो वर्णी को भगवान सिवाय कोई बात न करने की प्रतिज्ञा लिए। तब वर्णी अति प्रसन्न हुए और बोले कि, मुझे वही व्यक्ति अच्छा लगता है जो भगवान का स्मरण भजन करता है। त्यागी का त्याग ही आभूषण होता है।

श्रीहरि की यात्रा में एक गाँव आया। गाँव के बाहर सुंदर फूलो का बगीचा था। उस में एक विशाल बरगद था। बरगद पर हजारो भूत रहते थे। केले का पत्ता लाकर सोने की व्यवस्था कर दिये। उन्हें आँव (पेचिस-मलत्याग के साथ रक्त निकलना) दर्द के साथ हो गया था। श्रीहरि उनकी सेवा करते थे। उनके साथ कोई भी नही था। इस कारण से वे अतिशय निराश दिख रहे थे। श्रीहरि दया करके दो महीने तक उनकी सेवा किये थे। तत्पश्चात वे स्वस्थ हो गये थे। अच्छे से चलने लगे थे। इसके बाद भी श्रीहरि उनका एक मन जितना वजनदार सामान उठाते थे और वे हाथ में माला लेकर चलते थे। इसके बाद वे वर्णी के सुख-दुःख का ध्यान नही देते थे। उनके पास हजार स्वर्ण मुद्राये थी। वह उसमें से अच्छा भोजन करते थे। वर्णी गाँव से भिक्षा मांगकर भोजन करते थे। कभी भिक्षा न मिलने पर भुखे भी रह जाते थे। क्योकि तीर्थयात्रा में पराया अन्न पुण्य को क्षीण करता है। उसमें तो त्यागी के पास से द्रव्य लेकर भोजन करना संदेव अनुचित होता है। त्यागी के नियमानुसार भिक्षा

पेईज नं. १०

सुखनिधिको प्रणाम

– शा. स्वा. निर्गुणदासजी (अमदावाद)

वसन्ततिलका वृत्तम् ।

श्रीनीलकंठ हरिकृष्ण हरे दयालो स्वामिन् परात्परवराक्षरधाम वासिन,
हारिप्रसाद पुरुषोत्तम धर्मपुत्र नारायणं सुखनिधिं प्रणमाम्यहं त्वाम् ॥१॥
यद्वद्रमन्ति परमाणुगणा गवाक्षे भूमन्नसंख्यभुवनानि तथोद्व्रजन्ति ।
त्वद्धामरोमविवरे निखिलार्ति हारिन नारायणं सुखनिधिं प्रणमाम्यहं त्वाम् ॥२॥
विघ्नोघपूगदलनस्मरणं शरण्यं पाषण्डखण्डनविचक्षण मात्मकाम् ।
शेषागमश्रुतिशिरोक्षरमुक्तगीतं नारायणं सुखनिधिं प्रणमाम्यहं त्वाम् ॥३॥
संसारनीरनिधिममज्जदसंख्य जीवान्निर्हेत्वदम्र दयया द्रुतमुदधरन्तम् ।
अप्राकृतान्यतुलनोज्झितपुण्यकीर्ति नारायणं सुखनिधिं प्रणमाम्यहं त्वाम् ॥४॥
निर्दोषभक्त जनजुष्टमनन्तकोटिब्रह्माण्डजन्मपरिपालनभंगलीलम् ।
कल्याणकारिसकलाचरितं स्वतंत्र नारायणं सुखनिधिं प्रणमाम्यहं त्वाम् ॥५॥
दिव्यादभूतानवधिकातिशयस्वसिद्धजानादिसदगुणनिधानमनन्यसाम्यम् ।
एकान्तधर्मभवनौ परिपोषयन्तं नारायणं सुखनिधिं प्रणमाम्यहं त्वाम् ॥६॥
वाक्यामृताब्धिपरितर्पितभक्तजातं स्वीयान्तरारिदलनातुलप्रतापम् ।
अज्ञानसंजतिमिरव्रजहारिबांध नारायणं सुखनिधिं प्रणमाम्यहं त्वाम् ॥७॥

इन्दीवरासितमणीन्द्रपयोदवर्णकोटिस्मरस्मयविभेदनदिव्यरुपम् ।
संचिन्तितं परमहंसगणैरजस्त्रं नारायणं सुखनिधिं प्रणमाम्यहं त्वाम् ॥८॥
इति अचिन्त्यानन्द वर्णि रचित श्रीनारायणस्तवनाष्टकम् ॥

श्रीनीलकंठ हरिकृष्ण हरे दयालो स्वामिन् परात्परवराक्षरधाम वासिन,
हरिप्रसाद पुरुषोत्तम धर्मपुत्र नारायणं सुखनिधिं प्रणमाम्यहं त्वाम् ॥१॥

पर अर्थात् जिसे कोई समझ नसके न ज्ञान कर सके, वह जीव के बुद्धि से दूर है उसी आत्मा को अहम कहते है । यदि कोई साधना द्वारा या ईश्वर की कृपा से आत्म दर्शन किया हो । वे आत्मदर्शी या ब्रह्म ज्ञानी भी स्वरुप को नही जान सकते है तथा पहचान भी नही सकते है । जिसका ऐसा स्वरुप है वह परमेश्वर इस भूलोक पर मनुष्य शरीर धारण करके संसार की सभी प्रकार की शोभा-सम्पत्ति को धारण करके नीलकंठ नाम से संसार के हित के लिए वनविचरण करके कठिन तपस्या कर रहे है । वे अक्षरधाम में निवास करने वाले धर्मदेव के पुत्र में प्रगट होकर हरिकृष्ण नाम से पहचाने जाते है । वे साक्षात् श्रीहरि जीव के प्रति दया भाव वाले सम्पूर्ण विश्व के शासक और नियंता भी है । जो जीवमात्र को स्वीकार करने योग्य है अर्थात् प्रेम से प्राप्त करने योग्य है । क्योकि पुरुषो में साक्षात् पुरुषोत्तम वे ही है । वे ही जीव और ईश्वर और विश्व सृष्टा प्रकृति-पुरुषो, महापुरुषो सभी के नियन्ती और सभी के स्वामी है । वे आज हरिप्रसाद विप्र के धर्म पुत्र के रुप में प्रगट होकर स्वामिनारायण नाम से जगत में प्रसिद्ध होकर शरण में आये सभी जीवों को आन्तरिक सुख के निधी अर्थात् अक्षरधाम का महासुख प्रदान करे ऐसे हमारे ईश्वर आप को साष्टांग प्रणाम करता हूँ ।(१)

यद्वद्रमन्ति परमाणुगणा गवाक्षे भूमन्नसंख्यभुवनानि तथोद्व्रजन्ति ।
त्वद्धामरोमविवरे निखिलार्ति हारिन नारायणं सुखनिधिं प्रणमाम्यहं त्वाम् ॥२॥

आप का अनिवाशी धाम निवास स्थान है जो सगुण मूर्तिमान है। आप के दिव्य-अलौकिक शरीर के रोये के छिद्रो में असंख्य ब्राह्मांडो अणु की तरह उड़ते रहते है । जिस प्रकार संसार के निवास के घर में खिडकी या रोशनदान में कोई छिद्र हो उसमें प्रकाश में सूक्ष्म कण उडते दिखाई देते है। उनकी गणना नही कर सकते है । इसी प्रकार आप के अक्षरधाम में छिद्रो में उडने वाले ब्रह्मांड की संख्या गिननही सकते वे असंख्य है। ऐसा वेद भी कहते है। ऐसे अद्‌भुत दिव्यधाम निवासी सभी प्राणीयों का सभी प्रकार के दु:खो को स्मरणक रते ही दूर करत देते है। ऐसे स्वामिनारायण नाम से संसार में प्रसिद्ध शरणागत जीवो को आन्तरिक सुख के जाने आर्थात् अक्षरधाम का महासुख दे ऐसे हमारे इष्ट आप को मैं साष्टांग वंदन करता हूँ।(२)

विघ्नोघपूगदलनस्मरणं शरण्यं पाषण्डखण्डनविचक्षण माप्तकाम् । शेषागमश्रुतिशिरोक्षरमुक्तगीतं नारायणं सुखनिधिं प्रणमाम्यहं त्वाम् ॥३॥

आप के शरणागत एकान्तिक भक्त जो आप के नाम स्मरण मात्र से सभी प्रकार के बड़े विघ्नो के समुदाय से मुक्त हो जाता है । इसलिए आप अकेले ही बड़े ही समर्थ सिद्ध और अक्षरमुक्तों को भी आश्रय देने वाले है। वे सभी आप के सहारे स्थिर रहते है। शेषनारायणजी एक हजार मुखो से और वेद की असंख्य श्रुतियो अर्थात् वेद के श्लोक शारदा सरस्वती और जो महान मुक्त पद प्राप्त कर चुके है । ऐसे अक्षर मुक्त भक्त आप का गुणगान करते हे। आप के संकल्प मात्र से ही संसार के दम्भी-पाखंडियो का नाश हो जाता है । ऐसे स्वामिनारायण नाम से संसार में प्रसिद्ध हुए शरण में आये हुए को सुख की निधिअर्थात् अक्षरदाम का महासुख देते है ऐसे मेरे इष्टदेव मैं आप को साष्टांग प्रणाम करता हूँ।(३)

संसारनीरनिधिममज्जदसंख्य जीवान्निर्हेत्वदभ्र दयया द्रुतमुदधरन्तम् । अप्राकृतान्यतुलनोज्झितपुण्यकीर्ति नारायणं सुखनिधिं प्रणमाम्यहं त्वाम् ॥४॥

आकाश की तरह आपी की दय का कोई पार नहीं है। ऐसे किसी भी प्रकार का उद्‌देश्य अर्थात् स्वार्थ वगर की दया करके इस संसार रुपी क्लैश दु:ख और कष्ट के अपार सागर में असंख्य जीव जो डूबकी लगा रहे है तत्काल उन जीवो का उद्धार करके अपने दिव्य अक्षरधाम में निवास कराते है । इस कारण से आपकी कीर्ति और यश इतना पुण्यशाली है कि उसके समान दूसरा कोई अक्षर पर्यन्ति ऐसी यश और कीर्ति नही प्राप्त कर सकता है। जो अलौकिक है इनके दिव्यता की तुलना किसी से नही हो सकती है ऐसी पावनकारी है। ऐसे स्वामिनारयण नाम से संसार में प्रसिद्ध आप की शरण में आकर सर्व जीव अत्यधिक सुख की निधिअर्थात् अक्षरधाम का महासुख पाता है। ऐसे हमारे ईष्टदेव मैं आप को साष्टांग प्रणाम करता हूँ। (४)

निर्दोषभक्तजनजुष्टमनन्तकोटिब्रह्माण्डजन्मपरिपालनभंगलीलम् । कल्याणकारिसकलाचरितं स्वतंत्र नारायणं सुखनिधिं प्रणमाम्यहं त्वाम् ॥५॥

आप के शरण में आये अर्थात् आप के द्वारा स्थापित देव, आचार्य और शास्त्रो से जुडे लोग ऐसे वे भक्त जिसमें से सभी प्रकार के दोष नष्ट हो गये है उनको सदा मनोरंजन पूर्ण आनन्द देते है । भक्तो के समूह का रंजन करते है । और असंख्य करोडो ब्रह्मांड की स्थिति उत्पत्ति और प्रलय जिसके लिये लीला मात्र है, ऐसे असंख्य दिव्य चरित्र है अथवा मानव शरीर धारण करके मानव चरित्र हो ऐसे सभी लीला चरित्र जीव मात्र के लिए कल्याणकारी है। स्वयं स्वतंत्र है उन्हें किसी की अपेक्षा और सहायता की आवश्यकता नही है । ऐसे स्वामिनारायण नाम से संसार में प्रसिद्ध शरण में आये सभी जीवो को सुख की निधिअर्थात् अभरधाम का महा सुख देते है। ऐसे हमारे ईष्टदेव मैं आप को साष्टांग प्रणाम करता हूँ। (५)

दिव्यादभूतानवधिकातिशयस्वसिद्‌धजानादिसदगुणनिधानमनन्यसाम्यम् । एकान्तधर्मभवनौ परिपोषयन्तं नारायणं सुखनिधिं प्रणमाम्यहं त्वाम् ॥६॥

इस पृथ्वी पर जिनका एकान्तिक धर्म पोषण करने के लिए दिव्य में दिव्य है, अद्‌भुत है। ऐसा भूतकाल में नही हुआ है ऐसा है। स्वयं सिद्ध है। किसी के कहने से प्रार्थना कार्य नहीं किये है । जिनका ज्ञान, धर्म, भक्ति वैराग्य इत्यादि पर सद्‌गुणो के निधिअर्थात सागर है। जिनके समकक्ष संसार का कोई दूसरा सिद्ध पुरुष या महापुरुष नहीं हो सकता है। ऐसे समर्थवान आने वाले का भला किये है । ऐसे स्वामिनारायण नाम से संसार में विख्यात के शरण में आये सभी जीवो को आन्तरिक सुख की निधिअर्थात् अक्षरधाम का महासुख देते है। ऐसे हमारे ईष्टदेव मैं आप को साष्टांग

प्रणाम करता हूँ।(६)

वाक्यामृताब्धिपरितर्पितभक्तजातं स्वीयान्तरारिदलनातुलप्रतापम् । अज्ञानसंजतिमिरव्रजहारिबांध नारायणं सुखनिधिं प्रणमाम्यहं त्वाम् ॥७॥

जीव के हृदय में व्याप्त अहंकार और ममत्व अर्थात् मैं और मेरा अज्ञान रुपी अंधकार को अपन भक्तो के समूह को सत्य पर्यात् का ज्ञान का उपदेश वचनामृत में प्रसिद्ध जिसकी संख्या २७३ है जिसे पाँच नंद संतोने १. गोपालानंद स्वामी २. मुक्तानंद स्वामी ३. ब्रह्मानंद स्वामी ४. नित्यानंद स्वामी ५. शुकानंद स्वामी जैसे समर्थ विद्वानो ने संग्रहित किया है। इसके द्वार सदैव संतोष और आनंद देते है। और उपदेश से प्राप्त ज्ञान द्वारा भक्तो के अन्तःकरण में रहे शत्रुओ को नाश करके अतुल शक्ति प्रदान करते है। ऐसे स्वामिनारायण नाम से संसार में प्रसिद्ध शरण में आये सभी जीवो को सुख प्रदान करते हे तथा अक्षरधाम का महासुख देते है। ऐसे हमारे ईष्टदेव मैं आप को साष्टांग प्रणाम करता हूँ।(७)

इन्दीवरासितमणीन्द्रपयोदवर्णकोटिस्मरस्मयविभेदनदिव्यरुपम् । संचिन्तितं परमहंसगणैरजस्त्रं नारायणं सुखनिधिं प्रणमाम्यहं त्वाम् ॥८॥

बड़े-बड़े परमहंस अक्षरमुक्त ब्रह्मांड के नियंता नायक जगत के जीव, विद्वान, गृहस्थ और स्वयं के भक्तो द्वारा अखंडगान होता है। तथा आप के स्वरुप का चिंतनक रते है। जिसके दिव्य शरीर का वर्ण असाढ मास के मेघ के रंग का है। जो आकाश में बादलो जैसी गर्जना कर रहा है। लगता है शेषनाग के हजारो फन फुंकार मार रहे हो ऐसे मेघ जैसे श्याम शरीर वाले है। वे सुंदर है साक्षात् कामदेव का रुप भी मंद पड जाते। ऐसे स्वामिनारायण नाम से प्रसिद्ध के शरण में आ जाने से सभी जीवो को आन्तरिक सुख जगत में प्राप्त होता है। अर्थात् अक्षरधाम का सुख मिलता है ऐसे मेरे इष्टदेव मैं आप का साष्टांग प्रणाम करता हूँ।(८)

अनु. पेईज नं. ७ से आगे

वृत्ति ही त्यागी की निज वृत्ति का नियम है। बल्कि त्यागी के पास रहे द्रव्य में अनंत करोड दोर्ष होते है इस कारण से दो महीने में एक बार भी नही वर्णीने उनका अन्न ग्रहण किया था। सेवकराम ने वर्णी को कभी भी भोजन नही कराया था। सेवकराम अपनी जिम्मेदारी भूल गये थे। लेकिन वर्णीजी अनपे धर्म का पूर्ण पालन किये थे ।सेवकराम को कृतध्न जानकर श्रीहरिने उनका साथ छोड दिया। श्रीहरि का सहज स्वभाव ऐसा था की वह वजन के नाम पर रुमाल भी नही रखते थे।

श्रीहरि चल दिये इसके बाद सेवकराम विरह की वेदना नही सह सके। हजार स्वर्ण मुद्रा के बावजूद उन्हें भोजन अच्छा नहीं लगता था। वर्णी के उपकार तथा अपने अपमान को याद करके पश्चाताप करते थे। आगे जाने और अयोध्या पीछे आने में असमर्थ हो गये। इसके बाद एक वृक्ष के नीचे बैठकर अन्न-जल का त्याग करके देह को छोड़ दिये।

इस प्रसंग को श्रीहरिने संवत १८७६ मागसर सुद त्रयोदशी के दिन गढड़ा में बात किये थे। (वचनामृत ग.प्र.प्र. १०)

श्रीहरि की सेवा से वंचित होने के कारण सेवकराम साधुका अगला जन्म श्रीहरि की कृपा से काठियावाड में झींझर गाँव में क्षत्रिय कुल में हुआ। खोडाभाई राजपूत पूर्व जन्म के दोष से बहुत दुर्बल थे। श्रीजी महाराज की आज्ञा से सद्गुरु गोपालानंद स्वामी पच्चीस साधु मंडल के साथ झींझर गाँव में गये। साधु लोगो को भोजन कराने के लिए राजपूतने अपनी शूरवीरता की प्रतीक तलवार को बनिया के यहाँ गिरवी रख दी तथा अन्नलाकर भोजन करवाये थे। तब स्वामीजी कहे सभी संत पच्चीस-पच्चीस माला फेरे। खोडाभाई का व्यवहार सुधरे और तलवार वापस लाये। क्योंकि क्षत्रिय की तलवार चली जाय तो क्षत्रित्व चला जाता है। संतो की प्रार्थना तथा संतो को भोजन खिलाने के पुण्य से तथा एक-दो महीने में फसल के उत्पादन से तलवार वापस लाये।

गूरूपूर्णिमा के पवित्र पर्व के उपलक्ष्य में संक्षिप्त लेखन

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

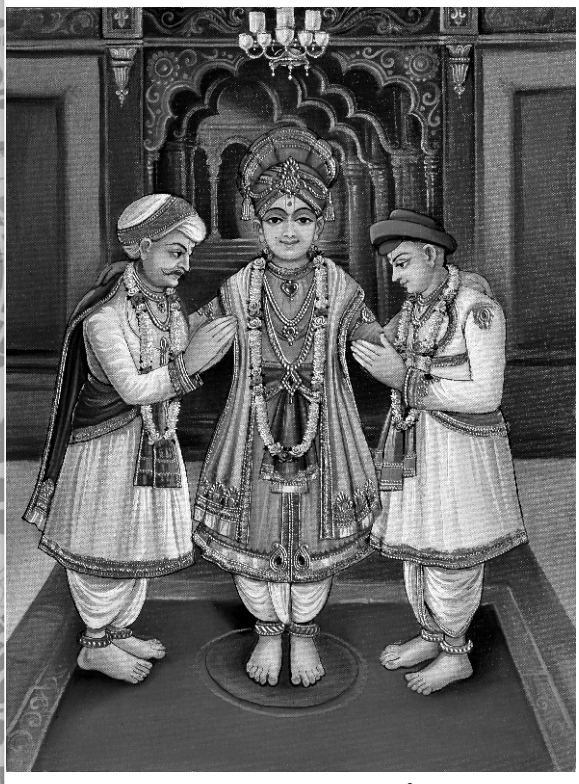

अषाढ सुद-१५ अर्थात् गुरु पूर्णिमा जिसे व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। हिन्दु संस्कृति में आज के दिन व्यास भगवान की पूजा की जाती है। क्योंकि व्यासजी ज्ञान मार्ग के आचार्य है। वचनामृत में श्रीहरिजी ने कहा है कि, जो सभी आचार्य हुए है उसमें से व्यासजी बड़े आचार्य है। शंकराचार्य, रामनुजाचार्य, माध्वाचार्य, निम्बकाचार्य, विष्णु स्वामी और वल्लभाचार्य जो बड़े-बड़े आचार्य हुए है वे सभी व्यासजी के वचन का अनुसरण करे तो आचार्य के वचन का लोगो में प्रमाण बनेगा, अन्यथा नही होगा और व्यासजी को दूसरी कोई ईच्छआ नही है क्योंकि व्यासजी वेद के आचार्य है। स्वयं भगवान है। इसलिए हम लोग-व्यासजी के वचनो का अनुसरण करेगे।

इस घोर कलियुग में वर्तमान समय पर सर्वावतारी सर्वोपरी भगवान श्री स्वामिनारायण अपने को देव, आचार्य और शास्त्र रुप में साक्षात् मिले है। इस प्रगट भगवान के वचन का अनुसरण करने से जीवात्मा का सरलता से कल्याण हो जाता है। वचनामृत में श्रीहरि कहते है कि जो सत्संगी है उन्हें अपने ऊद्धव सम्प्रदाय की विधितथा गुरु परम्परा अवश्य जानना चाहिए। कारण यह है कि सत्संगी से कोई पूछेगा स्वयं के मन में कोई तर्क आये यदि वह इस बात को नही जानेगा तो समाधान कैसे कर पायेगा। श्रीहरि स्वयं गुरु परम्परा की बात कहते है कि ऊद्धव रामानंदी स्वामी रुप में थे। रामानंद स्वामी श्रीरंग के विषय में स्वप्न में साक्षात् रामानुजाचार्य द्वारा वैष्णव दीक्षा पाये थे। इसलिये रामानंद स्वामी के गुरु रामानुजाचार्यजी थे और हम लोग रामानंद स्वामी के शिष्य है। इस तरह गुरु परम्परा सुरक्षित है। और हमारे धर्मकुल की स्थापना किये है इस लिये आप जाने।

अब अपने धर्मकुल स्थापना की विधितथा उसकी महिमा संक्षिप्त में समझे। श्रीहरि कही कोने या एकान्तवाली जगह पर नही, वरन संतो भक्तो की विशाल सभा में ये कार्य किये थे। असलाली गाँव की सभा में विचार विमर्श, जेतलपुर की सभा में क्रियान्वयन तथा वडताल की सभा में इस बात को स्थायी रुप दिये थे। यादगार के रुप में इस स्थान का दर्शन आज भी होता है। श्रीहरि स्वयं अक्षराधिपति पुरुषोत्तम नाारयण होने के बावजूद इस संसार की मर्यादानुसार सभा में लोकतान्तिक रुप से विचार-विमर्श करके निर्णय लिये थे। हहारे कई आश्रितो का तथा धर्म की रक्षा धर्मकुल के हाथ में सुरक्षित रहेगी। इस निर्णय से बड़े भाई रामप्रतापभाई के पुत्र अयोध्याप्रसादजी और छोटे भाई इच्छाराम के पुत्र रघुवीरजी का वेदोक्त विधिसे दत्तक, विधिसे पुत्र स्वीकार करके दोनो पुत्रो को अपने आसन पर बैठाकर प्रबन्धकीय सरलता के लिए उत्तर विभाग अहमदाबाद और दक्षिण विभाग वडताल इस प्रकार दो गद्दी बनाकर क्रमानुसार अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री तथा रघुवीरजी महाराजश्री को आचार्य पद दिये तभा भक्तो के साथ स्वयं श्रीहरिने पूजा आरती किये थे। उसी परम्परानुसार वर्तमान समय में भी धर्मकुल आश्रित भगवान के भक्त

अपने-अपने गुरु तथा धर्मवंशीय आचार्यश्री का पूजन जिसमें गुरु पूर्णिमा के दिन पर विशेष सभा का आयोजन करे गुरु पूजन करते है। श्रीहरि का वचन है कि इन दोनो आचार्योंकी वंशावली में से भविष्य में होने वाले आचार्य का जो भी आश्रय लेगा उसे मैं अवश्य अक्षरधाम में ले जाउगा।

कलियुग में स्त्री की गुरु स्त्री और पुरुष के गुरु पुरुष हो इस उद्देश्य से स्वयं श्रीहरिने धर्मवंशीय आचार्यश्री को गृहस्थ जीवन प्रदान किये। और इस मर्यादा का पालन करने के लिए स्त्री भक्तो को मंत्र का उपदेश आचार्यश्री की धर्मपत्नी जिन्हें पू. गादीवालाश्री के रुप में जाना जाता है। वही मंत्र देती है।

आचार्य स्थापना पश्चात श्रीहरिने संतो-भक्तो को इंगित करते वचन दिये थे कि इन दोनो आचार्यो को मैने अपने स्थान पर विराजित किया है। इस कारण से आप सभी लोग इन आचार्यो की आज्ञा का पालन करेगे और हमारी आज्ञा का पालन करते है। जो कोई मेरा आश्रित इन आचार्यो की आज्ञा का अनादर करेगा उनसकी अधोगति होगी ।आप सभी जिस भक्ति-भाव से हमारी पूजा करते है उसी प्रकार इन दोनो आचार्यो की भी करना। हमारी पूजा से जैसे कल्याण होता है उसी प्रकार इन दोनो आचार्यो की पूजा से कल्याण होगा। यह आप निसंकोच विश्वास करे। हमारी गद्दी पर बैठे आचार्य ये हमारे साक्षात् स्वरुप है।

धर्मवंशी आचर्यश्रीने तीन अबाधित अधिकार दिये है। (१) मंदिरो में मूर्ति प्रतिष्ठा करना (२) त्यागी को महादीक्षा देकर साधु बनाना तथा गृहस्थ को सामान्य भगवती दीक्षा, देकर हरिभक्त बनाना। इस प्रकार धर्मवंशी आचार्य के द्वार त्यागी जब तक साधु की दीक्षा न ले वहाँ तक वह भगवा धारण करके स्वामिनारायण भगवान का साधु नही होता है। उसी प्रकार गृहस्थ पुरुष धर्मवंशी आचार्य द्वारा और गृहस्थ स्त्री आचार्यश्री की पत्नी द्वारा मंत्र न प्राप्त करे तब हरि का सत्संगी भक्त नहीं बन पाता है।

श्रीहरि के समय में स्वयं श्रीहरि हाथ में कलम लेकर लिखी शिक्षापत्री उसी प्रकार नंद संतो द्वारा लिखे शास्त्र जैसे कि वचनामृत, सत्संगी जीवन, सत्संगिभूषण, भक्त चिंतामणी, निष्कुलानंद काव्य मुक्तानंद काव्य, हरिकृष्म लीलामृत, श्रीहरि चरित्रामृत सागर, प्रसादानंद स्वामी की बाते गोपालानंद स्वामी की बाते, स्वामिनारायण संहित,ा नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन इत्यादि प्रत्येक शास्त्रो में कम या अधिक आचार्यश्री की महिमा पढ़े या सुने होगे। इतना ही नही मुक्तानंद जैसे संतो में इतना लगाव था कि वो कहते थे श्रीहरि द्वारा स्थापित आचार्यो को श्रीहरि की तरह ही प्रसिद्ध करना है ।

वासुदेव महात्मग्रंथ में उल्लेख है कि गुरु से दीक्षा लिये वगैर मनुष्य की भक्ति मार्ग में प्रवेश वर्जित है। भगवान की पूजा का अधिकार मिलता ही नहीं है और गुरु ब्राह्मण और भगवान का भक्त होना चाहिए। गीतानुसार गुरु ज्ञानी होना चाहिए। संयमी तता सदैव जागरुक होना चाहिए। गुरु ज्ञान ग्राही होना चाहिए। और शिष्यो का गुरु के प्रति वफादारी और दृढ विश्वास होना चाहिए। हम लोग भाग्यशाली है हमें गुरु खोजने कही नही जाना हे। स्वयं श्रीहरि द्वारा उनके कुल में अपने लिए गुरु खोज रखे है ।स गुरु में श्रीहरिने समस्त गुण भर दिया है। इतना ही नहीं स्वयं आचार्य स्वरुप होकर धर्म की धुरी सम्भाले है (भगवान नहीं लेकिन श्रीहरि के दूसरे स्वरुप) संसार में कई लोग बुद्धि से गुरु खोजते है। परंतु ऐसे गुरु कई बार जेल यात्रा करते है आप सभी जानते भी है। ऐसे भूमित्र गुरु बन बैटे है जो स्वयं को आलोकित नही कर सकते है वे अपने शिष्यो को क्या आलोकित करेगे तथा परलोक में कैसे सुख दिलवा सकते है।

इस ब्रह्मांड में सर्व श्रेष्ठ गुरु भगवान जब हमें दिये है। आनेवाले २०७४ संवत में गुरु पूर्णिमा का पवित्र पर्व के अवसर पर श्रीहरि द्वारा स्थापित दो गद्दियों के प्रति निष्ठा रखने वाले संत-हरिभक्त साथ मिलकर मनन करते हुए निम्न लिखित बातो को प्रयोग में लाकर श्रीहरि को खुश करें।

परम पूज्य महाराजश्री या प.पू. बड़े महाराजश्री अथवा प.पू. लालजी महाराजश्री भीड में से जा रहे हो तो इस समय पर चरण स्पर्श नहीं हो सकता है। इस समय मानसिक वंदन करके खुश रहे। परंतु गर्दन या कुघ्नी या धोती स्पर्श की आशा कम रखे। आपका जो शुद्ध भाव है वह अन्तर्यामी श्रीहरि को ज्ञात है। हरिभक्तो के लिए मर्यादा और विवेक अति आवश्यक है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

लोय में श्रीहरिने जो शाक सुधारे थे वह चाकू

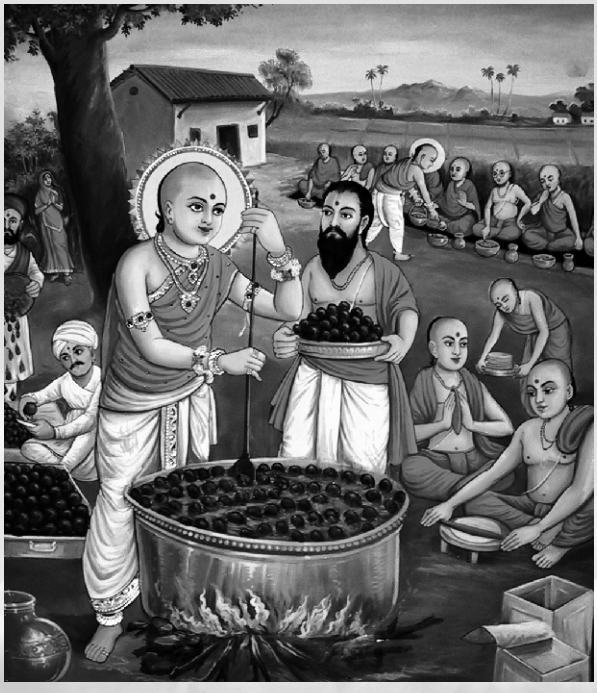

सर्वोपरी श्रीजी महाराज की उपस्थिति के समय के वातावरण की बैक अप की हार्डकापी अर्थात् अपना म्युजियम । उसी प्रकार लोया की शाकोत्सव की सुगंधआज भी सवा दो सौ वर्ष से सम्प्रदाय में फारवर्ड होती आई है । जब की श्रीजी महाराजजीने सव्यं संतो-हरिभक्तो के लिये बनाये गये शाक की दिव्यता तो कल्पना से परे !!

म्यूजियम के हाल नम्बर-४ में शाक सुधारने वाले चाकू का दर्शन करे तो उस शाक का फलेवर अपने को आभास होता है । अर्थात् उस समय कितने किलो शाक और कितने किलो घी का उपयोग हुआ होगा यह आँकडा गौण हो जाता है । कारण यह है कि इसी चाकू से श्रीजी महाराजजी स्वयं बैगन को सुधारे थे

- प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-जून-१८

रु।. २,५०,०००/- आस्ट्रेलिया प्रवास की अवधिमें प.पू. बड़े महाराजश्री के चरणों में प्राप्त भेंट ।

रु।. ५१,०००/- रमीलाबेन गोविंदभाई पटेल - संकल्प पूर्ण हुआ इस लिये - मणीनगर ।
रु।. १०,०००/- मीनाबेन के. जोशी - बोपल
रु।. ५,५५५/- गोहिल मधुभा तखुभा - भरुच
रु।. ५,०००/- दयाबेन जयंतीलाल आचार्य - मोरबी - हं. चेतनाबेन महेन्द्रभाई
रु।. ५,०००/- अ.नि. हीराबेन जगमालभाई खेर की याद में ह. चंदुभाई खेर - बळोल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि जून-१८

दि. ०१-०६-२०१८ श्री महिला मंडल स्वामिनारायण मंदिर बहनो का दरबारगढ - ह. सां.यो. राजकुंवरबा तथा उषाबा - मोरबी

दि. ०२-०६-२०१८ अ.नि. अशोककुमार मथुरदास काछीया - ह. कलाबेन, लुनावाडा ।

दि. ०३-०६-२०१८ (प्रातः) राकेशभाई अमीचंदबाई प्रजापति - हिंमतनगरवाले - हाल गांधीनगर

(११ बजे) श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज - लुनावाडा - ह. श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - लुनावाडा

(शायं) करुणाबेन कांतिलाल दाणी - प्रे. श्रीजीप्रकाश स्वामी - हाथीजण

दि. ०४-०६-२०१८ सत्संगी बहने - प्रे. हजुरी पार्षद वनराज भगत ।

दि. ०५-०६-२०१८ डॉ. रमेशभाई शर्मा - जेतलपुर

दि. ०६-०६-२०१८ (प्रातः) ठाकरशीभाई छगनभाई तारबुंदिया - ह. सुपुत्र भगवानजीभाई तथा ईश्वरभाई - प्रे. सां.यो. दयाबेन गुरु सां.यो. राजकुंवरबा तथा उषाबा - घनश्यामनगर - मोरबी

	(शायं) वर्षाबेन एन. पाठक तथा दिप्तीबेन - अहमदाबाद
दि. ०७-०६-२०१८	विनोदभाई रणछोडलाल पटेल (टैक्सीवाले) - चांदलोडिया
दि. ०८-०६-२०१८	(प्रातः) श्री स्वामिनारायण मंदिर सत्संग समाज - महादेवनगर - ह. श्री नरनारायणदेव महिला मंडल (दोपहर) जगदीशभाई कनुभाई पटेल - हाथपालिया, जि. महिसागर - प्रे. विश्वस्वरुप स्वामी
दि. ०९-०६-२०१८	(प्रातः) समूह महापूजा झूंडाल, पोर, चांदखेडा, धमासणा, गांधीनगर सत्संग समाज - ह. सुमनभाई पटेल (दोपहर) श्री स्वामिनारायणसत्संग समाज - मेमनगर - ह. विशाल कोठारी
दि. १०-०६-२०१८	(प्रातः) श्री स्वामिनारायण मंदिर - महिला मंडल एप्रोच - ह. रुपमबेन (दोपहर) श्री स्वामिनारायण मंदिर - सत्संग समाज तथा युवक मंडल - वडु (शायं) श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - नारणघाट
दि. १३-०६-२०१८	सत्संग समाज श्री स्वामिनारायण मंदिर -कर्मशक्तिनगर नरोडा - ह. श्री महिला मंडल
दि. १७-०६-२०१८	(प्रातः) रुद्र तुषारभाई पटेल - साबरमती (शायं) निर्मलाबेन डी. महेता - यु.एस.ए.
दि. १८-०६-२०१८	जवनिकाबेन कनुभाई पटेल (पलियडवाले)
दि. १९-०६-२०१८	अ.नि. भीमजी कुरजी हालाई - मेघपर-कच्छ हाल यु.के.

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सत्संग आख्यायिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सच्चा भक्त कैसा हो ?

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

विसनगर की यह विश्वास की बात ! विसनगर के हरिभक्त बहुत बहादुर थे । लडाई मेंनही सत्संग में ।

बहादुर दो प्रकार के होते है । कोई कहेगा यह भाई बहुत बहादुर है दस लोगो को हरा दिया दो लोगो मार दिया । लेकिन आध्यात्मिक विषय में बहादुर, शूरवीर किसे कहते है जो सद्‌गुणो को बनाये रखता है । कितनी भी परेशानी आ जाये फिर भी सत्संग की दृष्टि से पीछे नही होता है ।

विसनगर के भक्तो को सत्संग करने में थोडी परीक्षा देनी पडी थी । गाँव के एक विशेष क्षेत्र था । वह सत्संग से जलन रखते थे । सत्संगीयो को देखकर ईर्ष्या करते थे । जैसे चोट के उपर नमक छिडकदे इस तरह का प्रभाव पडता था । कोई भगवान के भक्त को देखे, तो तिलक को देखकर जल जाता था ।

एकबार कुछ सत्संगियो को उन्होने धमकाया कि बहुत बड़ा तिलक करके निकले है । यह बकवास अब बंद करो । तो भक्त कहते है कि हम ये तिलक जो लगाते है जो कंकु तथा गोपीचंदन से क्या बिल आप के घर पर आता है क्या ? यह तो मेरी मर्जी की बात है । सूबा कहता है कि आपका तिलक देखकर क्रोधआता है ।

विसनगर के भक्त इकट्ठे हुए और बोले कि अपना तिलक देखकर उसे क्रोधआता है । तो हम सभी कल से बड़ा तिलक करेगे उसे अच्छे से दिखे । क्यो कि हम लोगो का तिलक व्यवस्थित से देख सके ।

सज्जनो ! यह तिलक ये कोई बाह्य प्रतीक नही है । एक एक समर्पण की बात है । जिसे शर्म और संकोच लगता हो उसे इस कथा को सुनाया कि तिलक के लिए भक्तो ने कितना सहन किया है । कमजोर – कच्चे सत्संगियो को सफलता नही मिलती वे वही बने रहते है । शूरवीर ही आगे बढते है । आप सभी की ज्ञात ही है कि सरकारी विभाग में जो सेवा देते है उन्हे ट्रेनिंग करनी पडती है सरकारी विभाग में ऐसा नियम होता है । कुछ लोग कहते है अब एक महीना अहमदाबाद जाना पडेगा । क्या हुआ ? तो उत्तर मिलेगा ट्रेनिंग है । प्रशिक्षण पूर्ण होने के बाद परीक्षा आती है । परीक्षा उत्तीर्ण होने पर पदोन्नति होती है ।

हम शास्त्र पढ़ते है, कथा सुनते है, ये अपनी ट्रेनींग है । इसमें कभी परीक्षा भी आती है । परीक्षा अर्थात् मापन । सरकारी परीक्षा तो समझ में आती है । साहब दो चार अंक कृम्रांक भी दे देते है लेकिनये परीक्षा जरा कठिन होती है । यह अचानक आती है उसकी तारीख निश्चित नही होती है ।

हमारे जीवन में कभी भी कठिनाई आये तो परीक्षा है दूबरा भी आ सकती है । कईबार सत्संगी के रुप में अपनी परीक्षा भी होती है इसमें सावधान रहने पर पदोन्नति मिलती है । श्रीजी महाराज निश्चित कहते है. हा..... अब आप पास

विसनगर के भक्तो की ऐसी ही परीक्षा हुई थी । यह सूबा जलने वाला था । किसी का सुख देख नही सकता था । यह बात करता था कि ये स्वामिनारायण वाले मजा करते है । सब खा-पीकर सुखी है । सफेद कपडे पहनकर टहलते है । उन्हें सीधा करना है । और वह तो सत्ता में था – धीरे धीरे सत्संगियो को हैरान और परेशान करता था ।

एकबार वैशाख महीने के मध्य दोपहर को तप तथा धूप में बैठा दिया । पसीने आता रहो तब भक्त बैठे – बैठे धुन कर रहे थे । इस में सूबा की बहन अपने छोटे पुत्र को लेकर सत्संगियो के बीच मैं बैठ गयी । सूबो तुरन्त

आकर बोला बेन ! तुम क्यो यहाँ आयी हो ? तभी उसकी बहन बोली देखो आप पारिवारिक रुप से मेरे भाई हो ये बैठे सभी मेरे सच्चे भाई है। इसलिये इनके साथ बैठना है। लेकिन उस बच्चे के बारे में तो सोच ! जो होना हो होगा। आप को विचार नही आया तो मुझे क्या विचार करना है। कुछ समय पश्चात सूबा सभी सत्संगियो से कहा - कि आप लोग जाइये। धन्य है वह बहन जिसने अपने सगे भाई का साथ न देकर, भक्तो का पक्ष स्वीकार किया। यह तेजो द्वेषी सूबा ही है जो विना कुछ कारण के भक्त को परेशान किया। धन्य है विसनगर के भक्त कि धूप में भी बैठकर अपने कंठी और तिलक को मिटाया नही।

मित्रो ! यह बात पढ़कर विचारने योग्य है।अपने जीवन के साथ भी ऐसी परीक्षा हो तो, बाहर धूप में बैठना पडे तो क्या दशा होगी ? अपने को ऐसा करे तो पूजा कर लेगे और तिलक मिटा देगे।

इसलिए प्यारे मित्रो ! कमजोर मत बने। मजबूत बने। शूरवीर सत्संगी और सहजानंदी शेर बने किसी भी अवस्था में अपना धर्म छोडे नही तो ही सच्चे भक्त है। आप। ''विपते वरती रे कदी दीन वचन न भावे''

●

भगवान जो देते है वह रहता है

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

परेशान हो यह बात समझ में आती है। लेकिन लक्ष्मी जैसी देवी परेशान हो बात समझ से परे है। लक्ष्मी जी की परेशानी थोडी अलग सी थी। ''परोपकाराय सतां विभूतय'' लक्ष्मीजी की परेशानी परोपकार के लिये थी। जिसका ज्ञान हमें इस बात से होगा।

लक्ष्मीजी को विचार आया कि पृथ्वी से गरीबी दूर कर दे। उन्होंने यह विचार भगवान श्री विष्णुजी के सामने रख दिया। प्रभु बोले, रहने दे। यह अन्तर अनादिकाल से है और रहेगा भी। गरीब और अमीर का अन्तर कर्म और धर्म के आधीन है। उसमें हमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। कही गलत हो जाये तो लेकिन ये तो लक्ष्मीजी थी। यह बोली जो होना होगा होने दीजिए। मुझे गरीबी दूर करना है। आप सहायता करिये या ना करिए। मैं तो कैसे भी करुँगी। सहायता न करिए साथ तो आईए। और देखिये हम कैसे गरीबी दूर करते है।

प्रभु को साथ आने में कोई कष्ट नहीं था। भगवान और लक्ष्मीजी पृथ्वी पर आये। उन्हें सर्व प्रथम लकडहारा मिला। प्रचंड गर्मी में सिरपर लकडी का गट्ठर था। शरीर से पसीना निकल रहा था। कपड़े अच्छे नहीं थे। इस अवस्था वाले लकडहारे से शुरुआत ही करे। यह सुखी हो जाये तत्पश्चात दूसरा, तिसरा इस प्रकार सम्पूर्ण दुनियाँ को गरीबी से मुक्ति दिला दुँगी।

लकडहारे के पास जाकर अपने गले में अधिक मूल्यवाला सोने का हार निकालकर लकडहारे को दे दी। खुशी मन से लक्ष्मीजी प्रभु के साथ वापस आ गई। दूसरे दिन फिर पृथ्वी पर आई और उसी जगह से जा रही थी। तभी ठाकुरजी लक्ष्मीजी को बताये देवी। कल जिसे आप ने मूल्यवान हार दिया था। वही लकडहारा आज भी लकडी काट रहा है। यह देखकर लक्ष्मीजी परेशान हुई। लकडहारे से पूछने पर पता चला कि घर जाते समय नदी आई। नदी किनारे हार रखकर पानी पीने गया वापस आया तो हार नहीं था। आदमी का आवागमन तो नही था। जान नही सका कौन ले गया। लक्ष्मीजी हिंमत नही हारी। उन्होने लाखो का एक रत्न लकडहारे के हाथ में दे दिया। उन्होने निश्चित कर लिया था कि किसी भी शर्त पर गरीबी दूर करना है।

तीसेर दिन फिर इसी क्रम से। लक्ष्मीजी को लगा कि अब तो लकडहारा सुखी हो गया होगा। वह लकडी कांटने नही आयेगा। लेकिन ये क्या ? वही लकडहारा पूरे लगन से लकडी काट रहा था। उन्हें आश्चर्य हुआ। प्रभु बोले, देवी हम प्रारम्भ से ही कह रहे है कि गरीबी कर्मधार्माधीन है। इस में दखलगीरी करना उचित नही है। लक्ष्मीजी ने कारण पूछा ? लकडहारा उत्तर दिया। रत्न जेब में रखकर पानी पीने गये वही रत्न खिस कर पानी में गिर गया। काफी खोजे लेकिन मिला नही। इस कारण से लकडी काटने के अलावा कोई और उपाय नहीं है।

पूर्ण विचार करके लक्ष्मीजीने एक अक्षयपात्र लकडहारे को दी । तांबा की कटोरी जैसा अक्षय पात्र लेकर लकडहारा घर आया । लक्ष्मीजी के बताये अनुसार उसने कार्य किया । सब इस पात्र से प्राप्त हुआ । कई दिन के बाद पूरा परिवार भरपेट भोजन किये । लकडहारा खुश हो गया कि लक्ष्मीजी की कृपा से मेरी गरीबी दूर हो गयी । अब मुझे मजदूरी नहीं करनी होगी । रात्रि में सभी सो गये । दूसरे दिन उठकर अक्षयपात्र लेने गये तो वह वहाँ पर नही मिला । अब क्या करे ? अक्षयपात्र भी खो गया । पुनः लकडहारा कंधे पर कुल्हाडी और रस्सी लेकर जंगल की तरफ चल दिया ।

आज लक्ष्मीजी और भगवान आये तब लकडहारा को नही देखे । लक्ष्मीजी खुश हुई कि अब लकडहारे को मेहनत मजदूरी नही करना पडेगा । प्रभु से कुछ बात ही कर रही थी कि इतने में सामने से लकडहारा आता दिखाई दिया । लक्ष्मीजी देख कर दुःखी हो गयी । मैं इसको जितना धनी करना चाहती हूँ वह वैसे गरीब होते जा रहा है । क्या करे ? कारण पूछने पर लकडहारा कहता है कि कल तो हम लोग भर पेट भोजन किये लेकिन अक्षयपात्र खो गया । इस कारण से पुनः काम पर आ गया हूँ । अब तो लक्ष्मीजी और चिन्तित हो गयी । हाथ जोकर लक्षमीजी प्रभु से विनय की कि । आप दया करो कि गरीबी दूर करने की मेरी ईच्छा पूर्ण हो । लक्ष्मीजी के विनय पर भगवान को दया आ गयी । और लकडहारे को मात्र चार आना दिये ।

भगवान जब कुछ देते है तो साथ में सद्‌बुद्धी और सद्‌विचार देते है । घर जाते हुए लकडहारे को विचार आया । शेठ के पास से पाँच-छ महीना पहले चार आना उधार लिये थे । तो उसे आज दे दे । शेठ के घर जाकर उधार दे दिया । माँफी माँगकर कहने लगा कि शेठजी परिस्थिति के कारण पैसा वापस नही कर सका लेकिन आज चार आना मिला है तो आप का कर्ज पूर्ण कर दूँ। शेठ बोले । आज मैं तुम्हारे घर पैसा लेने आया था लेकिन तुम सोये थे । इस कारण से इस कटोरी को देखकर घर ले आया । आपने चार आना दे दिया । इस लिए ये कटोरी आप ले जाओ ।

लकडहारे का कार्य हो गया । घर आकर सभी ने भरपेट भोजन किये । आनंद से सो गये । प्रातः उठकर स्नान करने गया तो वहाँ पर पैर में कुछ लगा नीचे झूककर पानी में हाथ डाला तो रत्न मिल गया । उसके आनंद की कोई सीमा नही रही, वह समझ नही सका कि संयोग है । या भगवान की कृपा, प्रभु आप की लीला धन्य है ऐसा कहकर हाथ जोडकर उपर नजर किया तो देखा कि सामने वृक्ष पर चील्ह हे खतोने में चमकती वस्तु दिखाई दी । शीघ्रता से पेड़पर चढ़ गया तो देखा कि लक्ष्मी द्वारा प्रदान सोने का मूल्यवान हार वहाँ पर पडा था ।

लकडहारा तो सोचने लगा कि कैसी आश्चर्य की बात है । कड़ी महेनत पर कुछ नही मिलता था । आज चारो तरफ से बहुत कुछ मिल गाय । वह तो सुखी हो गया । भगवान की इच्छा से प्राप्त सुख उसके लिए बंधन नही बन सका । वह भगवान का भक्त होकर भक्तिमय जीवन व्यतीत करने लगा ।

इस घटना से लक्ष्मीजी को उनकी चिंता का उत्तर मिल गया । उनको विश्वास हो गया कि जब तक भगवान की सहायता न मिले तब-तब सफलता नही मिलती है । स्वयं लकडहारे की गरीबी दूर करने के लिए कितना प्रयास की लेकिन गरीबी दूर नही कर सकी । लेकिन भगवानने चार आने से सभी कष्ट दूर कर दिये ।

मित्र ! आपने देखा जबतक परमात्मा की कृपा न हो तब-तक सफलता नही मिलती है । जिसे भी सुखी होना हो उसे मेहनत, उद्यम तथा ईश्वर की कृपा मिले ऐसे प्रयास करना चाहिए । क्यो की परमात्मा की अल्प कृपा थोडी करुणा अनंत दुःखो को दूर कर देती है । इस घटना के पश्चात लश्रमीजी गरीबी निवारण का हठ त्याग दी । और सार्वजनिक रुप से बोली कि जिसे सुखी होना है उसे भगवान की भक्ति करना पड़े तथा प्रभु की आज्ञानुसार जीवन जीना चाहिए ।

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) "अपना सच्चा सुख कहाँ ?"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

कभी आप ने गम्भीरता से ऐसा सोचा है कि परमात्मा आप के है या संसार मेरा है। जब कथा सुनते है कि जीवन में कभी विपरीत अवस्था आती है तो अल्प समय के लिए परमात्मा याद आते है।

भगवत गीता में ऐसा प्रसंग है कि जीव परमात्मा का अंश है। तो हम जिसके अंश है उनको छोडकर संसार के साथ अधिक लगाव रखते है। क्या यह उचित है ? इस विषय पर कभी गम्भीरता से विचार किये है ? यह जीव संसार में आता है। शरीर धारण करता है और प्रत्येक क्षण शरीर और संसार से अलग होता है। शरीर धारण करने के बाद एक घंटा, दो घंटा, दिनो वर्षो वीतता जाता है। वैसे-वैसे इस संसार में रहने का समय कम होता जाता है। जो साथ छोड देने वाला है प्रत्येक क्षण उसके साथ सम्बन्धरखने का कारण क्या ? हमारा शरीर और जगत के साथ लगाव बढता जाता है। यह क्यो होता है ? हम इस संसार में क्यो खो जाते है ? हम जिसके साथ अधिक रहते है उसी के साथ अधिक लगाव होता है। उसके सिवाय चलता नही है। दूसरा कुछ दिखाई नहीं देता है। वही पर लगाव रुक जाता है। तो यह कारण शरीर के साथ और जगत के साथ लागू पडता है। समय से शयन और भोजन तथा सभी प्रकार से शरीर को सम्भालना पडता है। सभी पूर्ण आवश्यक है। उसमें लिप्त नही होना चाहिए। भोजन में कोई तकलीफ हो जाये शयन कम करने पर या शरीर की रक्षा करने में भूल हो जाये तो शरीर पर प्रभाव दिखाई देता है। रोग और कष्ट के रुप में शरीर हमें कष्ट देती है। जब संसार के साथ लगाव रखते है तब भी ऐसा ही होता है। मनुष्य का स्वार्थ होता है। मनुष्य आप के साथ अच्छे रुप से क्यो रहता है कि वह मेरे साथ अच्छे से रहे। जो कभी आप की सहायता किया होगा । वह कभी न कभी आप को उसकी सहायता का ज्ञान करा देगा कि मैंने आप का वह कार्य किया था। तो सोचिए भगवान कितने दयालु है। सब देकर भूल जाते है। सब माफ कर देते है। जब तक संसार के लोगो की अहम संतुष्ठ रहेगा तब तक खुश रहेगे। इस संसार में सम्बन्धको बचाने के लिये कितना अधिक करना पडता है। आप के बच्चे और पति कार्यालय से आते है इसके लिए कितना तैयार रहना पडता है। जब की भगवान का पेट भाव से भर जाता है। भगवान को कुछ नही चाहिए। जिसका मतलब यह नही है कि भगवान को भोग न लगाये, कभी आपात्काल में ऐसा भी कर देते है। मन से पूजा कर लेते है। महाराज अपने लिये मनुज जन्म लेकर पृथ्वी पर आते है। मंदिर शास्त्र, संत सब दिये सत्संग में जन्म भी दिये है। तो हम लोग महाराज के लिये क्या कर रहे है ? दो माला करने से ज्यादा कुछ नही इसके अधिक कुछ करने के लिये हमारे पास समय नही है। क्या ये उचित है ? परमात्मा को कुछ नही चाहिए। हम भगवान के साथ लगाव रखते है अपने कल्याण के लिये। जिसके माध्यम से यह संसार छूटता जाता है। तो हमें शांति से सोचना है कि 'अपना सच्चा सुख कहाँ है ? यह संसार परिवर्तनशील है जिससे हम प्रति पल दूर होते जा रहे है। उसमें बंधजाते है। तो क्या संसार और शरीर के प्रति प्रेम करना ठीक है या परमात्मा के साथ जो 'शाश्वत' है। उनके साथ प्रेम करना उचित है।

इस समय महाराज ने जीव की ''करनी'' के सामने तो देखा नही दैवी, आसुरी, मुमुक्षु, जिज्ञासु, विषयी, योगी भोगी जो भी जीव शरण में आता है विना देखे सगराम बाघरी जैसे भक्त का भगवान कल्याण करते है।

दैवी जीवो का मोक्ष दूसरे अवतार में करे लेकिन दैवी या आसुरी सभी का मोक्ष करना यह तो 'अवतारी' श्री स्वामिनारायण भगवान प्रगट होते है तभी होता है। इस समय महाराज निश्चित किये है कि जिसे दृढ निश्चय होता है। मेरे स्वरुप के प्रति निष्ठा हो और मुझे सब कुछ समझकर कार्य करता है मैं उसे अपने धाम में ले जाता हूँ.

''जाणीये आखा जगतने लई जइये अमारे दाम केडे न राखीये कोई ने एम हैये धणी छे हाम फरी-फरी फेरो पडे एवु करवुं नथी आ वार, सहु जीवनो सामटो, आज करवा छे उद्धार''

महाराज ने कितना सरल कर दिया है, फिर भी हम न कर सके तो किसका दोष है। यह हमारे उपर है कि हमें मोक्ष प्राप्त करना है या संसार में रहना है। माँ को घर में कितना कार्य होता है। इसलिये बालक को खिलौने देती है। लेकिन बच्चे को भूख लगी हो तो खिलौना नही देखता है। सब छोडकर रोते-रोते माँ के पास जाता है। इस तरह महाराज के पास भी कितना कार्य है। सम्पूर्ण सृष्टि का संचालन करना है। भगवान भी काम में व्यस्त है। इस लिये हमें जगतरुपी खिलौना दे दिये है। लेकिन जब मनुष्य को मोक्ष की भूख लगेगी तब जगत रुपी खिलौना नही दिखाई देता है। जीव दौड कर भगवान के पास जायेगा। जब तक मनुष्य को मोक्ष की सच्ची भूख नही लगेगी तब तक मनुष्य जगत रुपी खिलौने के साथ खेलता रहेगा। हम यदि 'निश्चित' और निष्ठा को मजबूत करके महाराज को कर्ता-धर्ता मानकर १००% समर्पित हो जाये तो भगवान आप की १००% बचा लेगे।

●

अन्तर में प्याप्त दोष और प्रकृतिको पहचाने

- पटेल लाभुबेन मनुभाई (कुंडाल)

अपने अन्दर रहे स्वभाव, दोष, प्रकृति जैसे आन्तरिक शत्रुओ को परमगति करने वाले स्वभावो का स्वभाव और लक्षण समझे। भगवान स्वामिनारायण गढडा अत्यं प्रकरण-२० में कहे है कि 'जीव जो पूर्व जन्म में कर्म किया है वही कर्म परिपक्व अवस्था में जीव मिलकर एक समान हो गया है। इसी को स्वभाव वासना प्रकृति कहते है। इस प्रकार स्वभाव अर्थात् पूर्व कर्म परिपक्व हो कर के जो प्कृति। अर्थात् क्षेत्रज्ञ, जीवात्मा में कारण स्वत्र बंधा रहता है यै शुद्ध विषयवासना स्वरुप स्वभाव है।

गुणातीतानंद स्वामी स्वभाव का निदर्शन करते हुए कहते है। 'विषय का संकल्प हो उसे वासना कहते है, लेकिनजो भगवान को याद करते हुए जो संकल्प हो उसे सर्व स्वभाव कहते है। एक छोटी सी कम्पैक्ट डिस्क (सी.डी.: में १०,००० पुस्तको की सूचना आ जाती है। उसी प्रकार अनंत जन्मों कर्म, स्वभाव, जीव नाम की छोटी डिस्क में चिपस जाती है।

''तुलसी इस संसार में, भाँति-भाँति के लोग'' यह पंक्ति मनुष्य स्वभाव की स्थूल रुप तथा विचित्रता पर परदा डालती है। किसी का काम का स्वभाव होता है।। किसी का मानवाला स्वभाव होता है। किसी का इर्ष्या वाला स्वभाव होता है। किसी का घमंडी स्वभाव होता है।

ये सभी स्वभाव कैसे सुधरे इसका उपाय गुणातीतानंद स्वामी १४ वें प्रकरण में आठमी बात में कहते है। ''स्वयं के अन्दर जो स्वभाव हो उसके दरवाजे पर खडे होकर देखे। फिर जिससे दूर हो उसका साथ करे, वैसा शास्त्र पढ़े। वैसे कीर्तन करे, ऐसे नियम में आगे बढ़े। अच्छा सुने तथा अच्छे से मनन करे ये सभी स्वभाव समझे तभी स्वभाव बदलेगा।

श्रीजी महाराजजीने भी वचनामृत सारंगपुर प्रकरण-१८ में कहे है ''जैसा व्यापारी होता है वैसा उसका व्यापार तथा उसका खाता होता है। इस तरह उसी दिन से सत्संग किया तब से लेखा-जोखा रखे तो स्वभाव परिवर्तित होगा। और ये विचार करे ''जब में सत्संग नही करता था तब मेरा कैसा मलिन स्वभाव था। सत्संग पश्चात अच्छा स्वभाव हो गया। वर्षदर वर्ष वृद्धि होती है। कम होने पर लोग तपस्या करते है लेकिन मूर्ख व्यापारी की तरह हरकत नहीं करता है। इसी तरह सत्संग करके आकलन करते रहना चाहिए। खराब स्वभाव खत्म हो जाता है। अर्न्तद्रष्टि से आकलन करके सत्संग द्वारा खराब, कठोर स्वभाव भी बदता जाता है।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव के केसर स्नान का दर्शन

सर्वोपरी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आदेश से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में विराजमान भरतखंड के राजाधिराज परम कृपालु श्री नरनारायणदेव को निज जेठ सुद-१४ ता. २७-६-१८ को बुधवार के दिन परम पूज्य लालजी महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा प्रातः ६-३० से ७-०० बजे के मध्य केशर स्नान विधिवत रुप से पूर्ण हुआ । जिसके यजमान प.भ.अ.नि. वल्लभभाई भूराभाई ह. प्रवीणभाई, नरसीभाई और हसमुखभाई (भायावदरवाले) परिवार के थे । शहर के अनेक भाविक श्रद्धालु हरिभक्तो ने केसर स्नान का अलौकिक दर्शन किये । ठाकुरजी के पूजारी ब्रह्मचारी संत ठाकुरजी की सेवा तन्मयता से किये । इससे श्री नरनारायणदेव और धर्मकुल को खुश किये ।(कोठारी शास्त्री नारायणमुनिदास)

नाना चिलोडा (न्यु शाहीबाग) सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पर कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा और आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.पी.पी. स्वामी (महंतश्री गांधीनगर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से नाना चिलोडा (न्यु शाहिबाग) के पास ता. १२-६-१८ दिन शनिवार रात के ८-३० से ११-०० बजे के बीच संतो द्वारा कथा वार्ता और सम्प्रदाय के प्रसिद्ध कीर्तनकार श्री पूरव पटेल और साथी कलाकारो द्वारा कीर्तन भक्ति करके सभी धर्म प्रेमीजनो को अलौकिक लाभ दिये । (श्री नरनारयणदेव आश्रित सत्संग समाज द्वारा पटेल डाह्याभई एच.)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदरि नवा-वाडज स्थल अधिक मास के अवसर पर ता. ३-६-१८ दिन रविवार को हरि भक्तो द्वारा घर से बनी मिठाई और व्यजन का छप्पन भोग अन्नकूट ठाकुरजी को समर्पित था । जिसका दर्शन करके सभी हरिभक्त धन्य हुए ।(हेमाभाई पटेल - कोठारी - नवा वाडज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कुंडाल में अधिक मास

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदरि (बहनोका) कुंडाल में एकादशी के दिन प्रातः ६-०० बजे से शायं ६-०० बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून सभी बहनोने समूह में किया । और पूरी रात जागरण करके भजन-कीर्तन किये । श्री घनश्याम महिला मंडल प्रेरणात्मक सेवा दिये थे । (लाभुबेन मनुभाई पटेल - कुंडाल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से उसी प्रकार स.गु. महंत शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी (मथुरा) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नालंदा-२ मोडासा में ता. १६-५-१८ से १२-६-१८ को पवित्र अधिक जेठ मास में पूरे वर्ष भर अपने सारे उत्सव उत्साह पूर्वक मनाया जाता है। इस अवसर पर प्रांतिज मंदिर के शा. गोपालजीवन

स्वामीने श्रीमद् सत्संगीजीवन कथा और शा.स्वा. हरिजीवनदासजीने भी श्री पंचम स्कन्धकी कथा का सुंदर रसपान कराये। अधिक जेठ वद अमावस्या को श्री घनश्याम महिला मंडल द्वारा ठाकुरजी के सामने छप्पन भोग अन्नकूट बनाकर रखा था। गाँव के सभी हरिभक्त दर्शन करके धन्यता को अनुभव किये । (के.बी. प्रजापति - मोडासा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटडी कथा पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ पाटडी मंदिर (बहनोका) में सेवा पूजा करते पू. सां.यो. शांताबा, सां.यो. हंसाबा और सां.यो.रंजनबा की प्रेरणा से पवित्र अधिक मास में ता. १-६-१८ से ता. ५-६-१८ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटडी में सभी हरिभक्तो के सुंदर सहयोग से श्रीमद् सत्संगीजीवन पंचान्ह पारायण शा.स्वा. त्यागवल्लभदासजी (सुरेन्द्रनगर) वक्ता पदने संगीत के साथ सुंदर कथामृत का पान कराये। पूर्णाहुति के अवसर पर सुरेन्द्रनगर मंदिर से पू. कृष्णवल्लभ स्वामी संत मंडल साथ आये थे। पाटडी और नजदीक के गांव के हरिभक्तोने कथा सुनकर खूब खुश हुए। (कोठारी नारणसिंह - परमार)

श्री स्वामिनारायण मंदिर खारवरा (वाली-राजस्थान)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि. स.गु. स्वामी भक्तिनंदनदासजी (वाली मंदिर) के समस्त संत मंडल की प्रेरणा से तता वाली प्रदेश के सभी हरिभक्तो के सहयोग से नव निर्मित खारवा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ७-५-१८ से ता. ९-५-१८ तक मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव, उत्साह से मनाया गया।

इस अवसरपर स.गु. शा. स्वा. चंद्रप्रकाशदासजी (बीलीया) वक्ता स्थान पर श्रीमद् भागवत अन्तर्गत दशम स्कन्धकथा का रसपान कराये। साथ तीन-दिन का विष्णुयज्ञ का आयोजन भी था। ता. ९-५-१८ के दिन अहमदाबाद से अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का मंगल प्रातः को आगमन हुआ। प.पू. महाराजश्री सर्व प्रथम नये मंदिर में ठाकुरजी की विधिवत प्राण प्रतिष्ठा करके यज्ञ और कथा की पूर्णाहुति किये । सभा में उपस्थित मारवाड वाली के श्री नरनारायणदेव का नियम निश्चय और धर्म पालन करने वाले हजारो भक्तो को आशीर्वाद देकर खुश हुए। सम्पूर्ण अवसर पर शा. स्वा. ब्रह्मस्वरुपदास, शा. स्वा. विजयप्रकाशदास और शा.स्वा. प्रेमप्रकाशदासने विधिवत सेवा प्रदान किये थे। (कोठारीश्री - वाली मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मतनगर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर के महंत शा.स्वा. प्रेमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से सत्संग की प्रवृत्ति निम्न लिखित रुप से मनाई गयी।

<u>अधिक जेठ मास में महिला कथा पारायण :</u> श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के सां.यो. भारतीबा तथा सां.यो. गीताबा ने यहाँ के मंदिर में सुंदर कथामृत का पान कराया था। जिस के यजमान गं.स्व. संतोकबेन पुरुषोत्तमभाई पटेल (साचोदर) थे। इस अवसर पर श्री घनश्याम मंडल की सेवा प्रेरणादायक थी। समस्त आयोजन मे श्री जे.डी. पटेल साहब, डॉ. के. के. पटेल और जसुभाई पटेल (मामलतदार) आदि रहे थे।

<u>सत्संग सभा :</u> ता. २५-५-१८ के दिन पवित्र पुरुषोत्तम मास में सुदंर सभा हुई। जिसमें शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी (कालुपुर) और महंत स्वामीने

श्रीहरि महि की बात किये । तथा हरिभक्त प्रसन्न हे । प्रसाद के यजमान चंद्रकिबेन दिनेशभाई थे ।

हिम्मनतगर मंदिर द्वारा श्री स्वामिनारायण म्युजियममें महापूजा : अधिक पुरुषोत्तम मास के परिप्रेक्ष्य में ता. ३-६-१८ रविवार के दिन अपने स्वामिनारायण म्युजियम में ५१ पाटला की समूह महापूजा का सुंदर आयोजन किया गया था । जिसके यजमान प.भ. राकेशकुमार अमीचंदभाई प्रजापति गाँधीनगर रहे थे । हिम्मनगर के सभी हरिभक्तो ने इस महापूजा का लाब लिये । श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रसादी की वस्तु का दर्शन करके खुश हुए ।

महामंत्र अखंड धुन: पवित्र पुरुषोत्तम मास में ता. १०-६-१८ एकादशी के दिन यहाँ के नये मंदिर के निमित्ते श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धून सुबह ७-००से शायं आरती तक समूह में की गयी । संतो ने हरि के महिमा का वर्णन किया । सभी संत-हरिभक्त द्वारा सुंदर प्रबन्धकिया गया था । (कोठारीश्री, हिम्मतनगर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर इडर १७२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. स्वामी सिद्धेश्वरदासजी की प्रेरमा से श्री स्वामिनारायण मंदिर इडर में बिराजमान श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज का १७२ वाँ पाटोत्सव जेठ सुद-१ तारीख २१-६-१८ गुरुवार के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा ठाकुरजी का महाभिषेक-अन्नकूट आदि विधिवत रुप से हुआ । जिस में यजमान प.भ. सूर्यकान्तभाई अमृतलाल पटेल (साबलवाड) परिवारने लाभ उठाया । इस अवसार पर इडर देश के गाँवो के हजारो हरिभक्त दर्शन के लिये आये थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पूरे सभा को प्रेमभरा आशीर्वाद भेजे थे । पाटोत्सव प्रसंग सेवा में शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी (धोलेरा) उत्तम स्वामी, और संत पार्षद जुडे थे ।(कोठारीश्री ईडर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर धांगधा

श्रीराधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा से प्रत्येक महीने ११ तारीख को होने वाली सत्संग सभा धांगधा में अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में मनाई गई । जिसमें पू. हरिभक्त स्वामी और उनके संत मंडल सर्वोपरी श्रीहरि महिमा और अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव और मूली श्री राधाकृष्णदेव की दया सहारा और धर्मकुल की आज्ञा में उपदेशात्मक बात किये । हरिभक्त खुश हुए । सभा का संचालन कोठारी विश्ववंदन स्वामीने किया था ।

जिसका संकलन श्री नटुभाई पूजारा सुंदर रुपसे सम्हाले थे ।(प्रति. अनिल दूधरेजिया - धांगधा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमका में (मूली देश) गुरु मंत्र महोत्सव

सर्वोपरि सभी अवतारो के अवतारी श्री स्वामिनारायण भगवान स्वयं के स्थान पर धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री को नियुक्त किये । जो पूरे स्वामिनारायण संप्रदाय के धर्मगुरु है । जिनके द्वारा गुरु मंत्र लेने के बाद मुमुक्षु संप्रदायका आश्रित माना जाता है । अभी ता. २४-६-१८ रविवार के दिन मूली देश के सुरेन्द्रनगर जिला के मेमका गाँव में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के हाथो द्वारा गुरु मंत्र महोत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया । मूली के संतोने गुरु मंत्र की महिमा विस्तार से सममझाये थे । हजारो नये

मुमुक्षुओने प.पू. आचार्य महाराजश्री गुरु मंत्र लेकर खूब धन्यता का अनुभव किये। अंत में सभी हरिभक्तो ने प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये।

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन को ३१ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी नरनारायणदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन का ३१ वाँ पाटोत्सव (सुवर्णसिंहासन महोत्सव) प.भ. शैलेषभाई ईश्वरदास पटेल (मोखासण) मुख्य यजमान पद पर और सहयजमान उत्सव पंकजभाई पटेल, गोविंदभाई पटेल तथा रमेशभाई मारफतिया परिवार था।

पाटोत्सव प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन प्रथम प्रकरण की पंचदिनात्मक पारायण शा.स्वामी भक्तिनंदासजी (जेतलपुर) का वक्तापद पर हुआ था। कथा में आने वाले उत्सव धामधूम से मनाया जाता था । कथा के मुख्य यजमानश्री अक्षयभाई प्रवीणभाई पटेल (करजीसण) सह यजमान गं.स्व. शांताबेन भाईलालभाई पटेल तता अ.नि. हरिकृष्णभाई ह. उपेनभाई शाह ने सुंदर लाभ लिये । पोथीयात्रा धामधूम से निकली थी । ठाकुरजी को नित नवीन अलौकिक अन्नकूट रखा जाता था । बच्चो द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम सुंदर किया गया था। पाटोत्सव के दिन जल यात्रा तथा पूजन विधिबाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री शुभ हाथो से स्वर्ण सिंहासन यजमान प.भ. पंकजभाई प्रहलादभाई पटेल द्वारा भव्यता से दर्शन के लिये खुला रखा गया है। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथो ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक विधिवत रुप से पूर्ण हुआ। प्रासंगिक सभा में तीर्थो से आये संतो की अमृतवाणी का लाभ मिला। ठाकुरजी का स्वर्ण आभूषण देने वाले प.भ. चंद्रिकाबेन विष्णुभाई पटेल (वडुवाला) तथा पाटोत्सव के विविधसेवा देने वों यजमानो की सभा में अच्छे से सन्मान किया गया था । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद देते हुए बोले कि विहोकन मंदिर अमेरिका का पहला मंदिर है। जो प.पू. बड़े महाराजश्री के परिश्रम से तैयार हुआ है। आप सभी भजन करियेगा तथा आने वाली पीढी को भी मंदिर में ले आइयेगा। प.पू. बड़े महाराजश्री भी वीर्डो काल द्वारा आशीर्वाद भेजे है।

अंत में प.पू. महाराजश्री के हाथो द्वारा अन्नकूट आरती का दर्शन करके हरिभक्त प्रसाद लेकर धन्य हुए । (बलदेवभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो अधिक मास मनाया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने इटास्का शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर में अधिक जेठ पुरुषोत्तम मास में अपने वर्ष दरम्यान आनेवाले उत्सव धामधूम से मनाया जाता है।

पवित्र पुरुषोत्तम मास में स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित यमदंड की नवान्ह पारायण शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर हुई । साथ ही साथ विष्णुसहस्त्र नामक यज्ञ का सुंदर आयोजन किया गया था। जिस में अनेक हरिभक्तो ने लाभ उठाया। (वसंत त्रिवेदी - शिकागो)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन में पाटोत्सव मनाया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा शा.स्वा. निलकंठदासजी तथा भक्ति स्वामी के मार्गदर्शन से अपने ह्युस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर के १८ वें पाटोत्सव को उल्लास के साथ मनाया गया।

प्रासंगिक सभा में अपने संतोने सुंदर अमृतवाणी का लाभ दिये।

भूदेव श्री नितिनभाईने सात दिन तक संस्कृत के श्लोक सुनाये थे। इस अवसर पर श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचदिनात्मक कथा के अवसर पर भव्य शोभायात्रा तथा पोथीयात्रा संत-हरिभक्त तथा यजमानो के विशाल समूह के साथ भजन-कीर्तन करते हुए स्वयं के मंदिर से आकर व्यास पर चढा दिये थे। मुख्य यजमान मंदाबेन हरिकृष्णभाई पटेल परिवार द्वारा आरती उतारी गयी।

कथा वाचक शा.स्वा. नीलकंठचरणदासजी श्रीमद् सत्संगीजीवन ने कथा का सुंदर रसपान कराये। कथा में आनेवाले उत्सवो को उल्लास पूर्वक मनाया गया था। प्रत्येक अवसर के सेवा भावी यजमानो को तथा हरिभक्तो, सेवको का सन्मान किया गया था। आमंत्रित मेहमानो का संतो द्वारा स्वागत किया गया। शनिवार प्रातः की अधिक मास का पूजन यजमान उषाबेन प्रवीणभाई शाह परिवार के द्वारा पूर्ण किया गया। अधिक मास का भव्य कार्यक्रम अन्य यजमानो द्वारा किया गया। उत्साही प्रेमी और अधिक श्रद्धालु प्रेसिडेन्ट प.भ. गोविंदभाई पटेल परिवार द्वारा महाप्रसाद के साथ उत्सवो का कार्यक्रम करने के लिये यजमानो की जानकारी दी गई। ठाकुरजी का महाभिषेक और अन्नकूट दर्शन करके हरिभक्त धन्य-धन्य हो गये। (प्रवीण शाह)

छपैयाधाम पारसप की श्री स्वामिनारायण मंदिर का तिसरा पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर के महंत शा.स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी की प्रेरणा से अपने छपैयाधाम पारसीप की श्री स्वामिनारायण मंदिर का तीसरा पाटोत्सव उल्लास से मनाया गया। इस अवसर के उपलक्ष में श्रीहरि एश्वर्य दर्शन की पचंदिनात्मक कथा शा.स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी के वक्ता पद से पूर्ण हुई। पवित्र अधिक मास में छपैयाधाम मंदिर में विराजमान सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के स्वरुपो का षोडशोपचार महाभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा विधिवत रुप से पूर्ण हुआ।

प्रासंगिक सभा में हमारे आई.एस.एस.ओ. मंदिरो के संतोने श्रीहरि की सर्वोपरी महिमा की बात करके अच्छा द्रष्टांत दिये। बच्चो द्वारा नृसिंह अवतार के पात्र द्वारा प.पू. आचार्य महाराजश्री को अत्यधिक खुश कर दिये। जिस में बीजल और पंकज पटेलने महत्वपूर्ण भूमिका निभाये थे। अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्यम हाराजश्रीने यजमान परिवार, बच्चो की टीम, और समस्त हरिभक्तो को प्रेमभरा आशीर्वाद प्रदान किये। तत्पश्चात ठाकुरजी की अन्नकूट आरती की गयी। सभी सेवा देने वाले हरिभक्तो का प.पू. महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा सम्मान किया गया।(प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में अधिक मास में ठाकुरजी का अभिषेक दर्शन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल कृपा से तथा यहाँ के मंदिर के

पूजारी भरतभाई के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में पवित्र अधिक मास में शनिवार के विकेन्ड में ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक विधिवत रुप से पूर्ण किया गया । हरिभक्तो ने भजन और धून गाये थे । यजमानो की सेवा की सराहना की गयी ।

श्री भरत भगत अधिक पुरुषोत्तम मास का सुंदर महात्म्य बताये । अंत में जन कल्याणकारी पाठ, श्री हनुमानचालीसा पाठ करके अन्नकूट दर्शन करके सभी भक्त खुश हुए ।(प्रविण शाह)

आई.एस.एस.ओ. एटलान्टा मंदिर का सातवाँ पाटोत्सव मनाया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल की खुशी से मंदिर के महंत स्वामी मुक्तस्वरुपदासजी और पार्षद नरोत्तम भगत की प्रेरणा से आई.एस.एस.ओ. एटलान्टा मंदिर का ७ वाँ पाटोत्सव ता. १६-६-२०१८ के दिन धूमधाम से मनाया गया । इस अवसर पर ता. १५-६-१८ से १७-६-१८ तक त्रिदिनात्मक सत्संगिभूषण कथा का आयोजन किया गया था । जिसके वक्ता पद पर शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी (अंजली मंदिर-जेतलपुर) बिराजकर कथा रुपी अमृत का पान कराये थे । इस अवसर पर ता. १६-६-१८ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री तथा अ.सौ. प.पू. गादीवालाश्री एवम् प.पू. श्रीराजाश्री पधारे थे । धर्मकुल के सानिध्य में कथा पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम छोटे बच्चे-बच्चियो द्वारा अच्छे से पूर्ण किया गया था । और पूज्य श्रीराजा के शुभ हाथो द्वारा भेंट प्रदान किया गया था ।

पाटोत्सव के प्रथम दिन पर ठाकुरजी की पूजा-अर्चना यजमान परिवार द्वारा पूर्ण किया गया था । तत्पश्चात प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा ठाकुरजी का महाभिषेक वेदोक्त विधिसे पूर्ण की गयी । तत्पश्चात कथा की पूर्णाहुति और धर्मकुल की पूजा, आरती तथा आये हुए संतो की पूजा एवम् यजमानश्री का सन्मान किया गया । प.पू. आचार्य महाराजश्री के हाथो द्वारा मंदि रकी कमेटी संगीत कमेटी, युवक मंडल के युवाको के हार पहनाकर आशीर्वाद प्रदान किये । अंत में प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री ने प्रेम से लिप्त आशीर्वाद प्रदान किये थे । अंत में ठाकुरजी की अन्नकूट आरती की गई थी । सभी हरिभक्त प्रसाद ग्रहण करके धन्य हुए । पाटोत्सव के अवसर पर किचन में बहनो की सेवा तथा युवको की सेवा प्रेरणादायक थी । (एटलान्टा मंदिर द्वारा)

पीछले अंक का सुधार

प.पू. लालजी महाराजश्री रणजीतगढ़ श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आये थे । तब उनके आशीर्वाद से और स.गु. पूज्य स्वामी भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मासिक के २०५ सदस्यो ने अपने पसंद के हरिभक्तो के द्वारा रुपया ५१,२५०/- का सौजन्य भेट दिये थे । जिससे हरिभक्तो को रुपे २५०/- में आजीवन सदस्य बनने का लाभ मिला है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यु राणीप पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री तथा शोभायात्रा। (२) हरिद्वार में श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से-२ द्वारा आयोजित श्रीमद् भागवत कथामृत पान कराते वक्ता श्री। (३) अंजलि मंदिर में ठाकुरजी की षोडशोपचार विधि करते संत। (४) लुणावाडा मंदिर द्वारा विद्यार्थीयो को नोटबुक वितरण। (५) शिकागो मंदिर में मारुती यज्ञ दर्शन।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

1

2

3

4

5

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में अधिक मास में ठाकोरजी समक्ष अन्नकूट का दर्शन। (२) अधिक मास में अपने मंदिर में पूरे वर्ष उत्सव मनाने की गौरवशाली प्रणाली है। इस क्रम में श्री नरनारायणदेव समक्ष हिमालय दर्शन। (३) वायरन (यु.एस.ए.) मंदिर का पाँच वे पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक के बाद आरती उतारते प.पू. लालजी महाराजश्री। (४) एटलान्टा (यु.एस.ए.) मंदिर का सातवे पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए तथा सभा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री। (५) लासएंजेलस मंदिर में हरिभक्तों के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री।

Praful Kharsani